''आय के स्त्रोतों के संदर्भ में कौटिल्य के विचार का विश्लेषण''

डॉ० जितेन्द्र गोपाल

कौटिल्य के कई नाम संस्कृत साहित्य में आते हैं। जैसे, विष्णु गुप्त तथा चाणक्य। कौटिल्य तक्षशिला में अध्यापन कार्य करते थे। यहाँ चन्द्रगुप्त मौर्य, कौटिल्य के शिष्य थे। तत्कालीन समय मगध के ऊपर महापद्मनन्द का शासन था।

महापद्मनन्द के शासन को समाप्त करने और चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन को आरम्भ करने का श्रेय कौटिल्य को ही दिया जाता है। संस्कृत साहित्य के कुछ ग्रन्थों के अनुसार यह कहा जाता है कि महापद्मनन्द के शासन से उस राज्य के कुछ प्रतिष्ठित लोग बहुत अप्रसन्न हो गये थे। वे चाहते थे कि किसी प्रकार नन्द का शासन समाप्त हो अतः वे लोग ऐसे व्यक्ति की खोज में थे जो यह कार्य सम्पादित कर सके। ऐसा कहा जाता है कि उन लोगों ने एक स्थान पर एक ऐसे काले व्यक्ति को देखा जो कूश की जड़ खोदकर उसमें मट्ढा डाल रहा था। लोगों के पूछने पर उसने बताया कि यह कूश मेरे पैर में गड़ गया था इसलिए जबतक इसे समूल नष्ट नहीं कर दूँगा मैं कोई अन्य कार्य नहीं करूँगा। इस बात को सुनकर उन लोगो ंने सोचा कि महापद्मनन्द का शासन समाप्त करने के लिए यही उपयुक्त है। अतः उन लोगो ंने बिना नन्द से आज्ञा लिए उस व्यक्ति को भोजन करने लिए निमंत्रण दे दिया। ब्राह्मणों के बीच में एक काले–कलूटे व्यक्ति को देखकर नन्द ने उसे बाहर निकल जाने की आज्ञा दी। इस अपमान के कारण उस व्यक्ति ने अपनी शिखा खोल कर यह प्रतिज्ञा की कि जबतक में महापद्मनन्द का शासन समाप्त नहीं करूँगा तब तक मैं शिखा नहीं बाँधूंगा। उस व्यक्ति ने कूटनीति के प्रयोग से नन्द को मगध के राज सिंहासन से हटाकर चन्द्रगुप्त को राज सिंघासन पर बैठाया। चाणक्य का सम्पूर्ण जीवन अत्यधिक सादा रहा।